ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-24 मार्च-II, 2017 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

शिव जयंति पर्व मनाया धूमधाम से

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी शिवध्वज लहराते हुए। साथ हैं ब्र.कु.निर्वैर, इशू दादी तथा देश विदेश से आए भाई-बहनें खुशी का इज़हार करते हुए।

माउण्ट आबू। 81वीं शिव जयंति पर्व पर ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने आबू पर्वत पर स्थिति ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय ओम शांति भवन में शिवध्वज फहराया। इस अवसर पर अपने आशीर्वचन में दादी ने कहा कि परमात्मा का अवतरण इस धरा पर इसलिए हुआ है ताकि यहां सुख, शांति की स्थापना तथा बुराइयों की सदा के लिए विदाई हो। अब भारत पुन: सोने की चिड़िया कहलायेगा। सभी उस परमात्मा की संतान हैं और आपस में भाई-भाई हैं। यह विश्वव्यापी भावना अपना व्यवहारिक रूप ले लेगी। शिव का अवतरण अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान के प्रकाश से सर्व आत्माओं को प्रकाशित करने का यादगार है। शिव जयंति पर्व विश्व इतिहास में परमात्मा के विशेष पार्ट को समझने व जानने का अवसर है। परमात्मा शिव स्वयं सत्य ज्ञान द्वारा इस कलियुगी दुनिया को फिर से सतयुगी दैवीय दुनिया में परिवर्तन कर रहे हैं।

इस अवसर पर संस्थान के मुख्य सचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम का सैम्पल यहां दिखाई दे रहा है। देश-विदेश के भाई-बहनों ने इस आध्यात्मिक राह पर चलकर अपने जीवन को शांतिमय बनाया है। जो अपने आप में परमात्मा की शिक्षाओं द्वारा परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ब्रहमाकुमारी संस्था के सभी परिसरों में क्रमवार शिवध्वज लहराया गया।

इस अवसर पर भारत के अलावा 60 देशों से आए लगभग तीस हज़ार लोगों ने कार्यक्रम का लाभ लिया। परमात्मा की शिक्षाओं का एक संकल्प लेकर सभी ने उस संकल्प को जन-जन तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया ताकि सभी अपने परमपिता से सुख-शांतिमय जीवन जीने का अधिकार प्राप्त कर सकें।

सत्यमेव जयते अहिंसा परमो धर्म

पुरी-ओडिशा(जी.आर.सी.)। ब्रह्माकुमारीज़ के पुरी स्थित गॉडली राजयोग रिट्रीट सेंटर पर सत्यमेव जयते अहिंसा परमो धर्म और श्रीमद्भगवद् गीता का आयोजन हुआ। जिसमें तीन सत्रों में विभिन्न विषयों पर अति विद्वत डाक्टर्स, प्रोफेसर्स, स्कॉलर्स, गीता पाठियों के द्वारा चर्चा की गई। जिसमें कुछ के दिये गये दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं।

समस्याओं का समाधान सिर्फ श्रीमद्भगवद् गीता के पास है

डॉ. पुष्पा पाण्डे जिन्होंने गीता पर रिसर्च किया है ने कहा कि आज जहाँ बहुत सारी आध्यात्मिक पुस्तकें, ग्रन्थ हमारे देश में मौजूद हैं, फिर भी समस्याओं का अंबार है। इन सारी समस्याओं का समाधान सिर्फ श्रीमद्भगवद् गीता के पास है। सत्यता और खुशी को हम परमात्म शक्ति द्वारा प्राप्त करके अपने मन को शक्तिशाली बना सकते हैं। आज मनुष्य नाखुश है, उसका सिर्फ यही कारण है कि आज वो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से ग्रस्त है। इन सभी से मुक्ति और जीवनमुक्ति इस ज्ञान द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रो. हरेकृष्ण सतपथी पूर्व कुलपति, तिरुपति राष्ट्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय ने कहा कि धर्म ही सत्य है और परमात्मा जो सभी गुणों और शक्तियों का सागर है।

हम सभी आत्मायें जो पराभौतिक शक्ति भी कहलाती हैं, जब हम आत्मायें और परमात्मा एक दूसरे से मिलते हैं तब जाकर योग की अनुभूति होती है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि प्रजापिता आत्मा विश्व के रचयिता हैं। उनका नाम शिव है, वो निराकार हैं। उनकी पूजा ज्योतिर्लिंग के रूप में आज भी होती है, उन्हें लोग सदाशिव भी कहते हैं, क्योंकि वो जन्म-मरण से न्यारे हैं। वो इस धरती पर तब अवतरित होते हैं जब इस धरती पर पापाचार, भ्रष्टाचार बढ़ जाता है। हम परमात्मा से शांति और आनंद की प्राप्ति तब कर सकते हैं, जब हम अपने आपको पहचान लें।

यही समय है परमात्म-अवतरण का

प्रो. अलख चन्द्र सारंगी,पूर्व कुलपति,श्री जगन्नाथ संस्कृत विद्यालय,पुरी ने कहा कि धर्म का अर्थ है धारणा, अर्थात् हममें दिव्य गुणों की धारणा हो, तब कह सकते हैं कि हम धर्म पर चल रहे हैं। जैसे परमात्मा ही सत्य है और सत्य ही परमात्मा है। हमारा अंतिम लक्ष्य है सत्य को स्वीकार करना। राजयोग तो सभी योगों का राजा है, और इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा सिखाया जाता है। जो श्रीमद्भगवद् गीता के ज्ञान की पुनरावृत्ति है। यही वो समय है जब भगवान धरती पर अवतरित होकर हमको सतयुग की स्थापना के लिए सत्य गीता ज्ञान दे रहे हैं।

श्रीमद्भगवद् गीता पर राष्ट्रीय सम्मेलन

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही एकमात्र ऐसा संस्थान है जो पूरी मानवता को यह सत्य संदेश देकर सतयुगी राज्य की स्थापना में जुटा है।

परमात्मा धरती पर अवतरित होते हैं

ब्र.कु.बृजमोहन, अतिरिक्त सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ ने कहा कि परमपिता परम

परमात्मा ही हैं जो हम मनुष्यों को देते हैं सत्य गीता ज्ञान

प्रो.सुरेन्द्र मोहन मिश्रा,एच.ओ.डी., संस्कृत पाली कुरुक्षेत्र युनिवर्सिटी, हरियाणा ने कहा कि निराकार परम आत्मा इस साकार देह में अवतरित होकर सत्य गीता ज्ञान देते हैं। उन्होंने आत्मा, परमात्मा और प्रकृति को अविनाशी बताते हुए कहा कि एक परमात्मा ही हैं जो हमें सत्य गीता ज्ञान देकर सतोप्रधान बना सकते हैं।

त्याग एवं अहिंसा श्रीमद्भगवद् गीता का मुख्य सिद्धान्त है

प्रो. राधा माधव दास, कुलपित,श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय पुरी ने कहा कि अहिंसा श्रीमद्भगवद्गीता का सार है। हम सभी जानते भी हैं कि बंकिम चन्द्र चैटर्जी, अरविंद और गांधी जी ने अहिंसा को अपनाया। त्याग, अहिंसा श्रीमद्भगवद्गीता का मुख्य सिद्धान्त है जिसे हमें अपने जीवन में धारण करना चाहिए। इसके अलावा प्रो. विनायक रथ, डॉ. सुरेश्वर मेहर, ब्र.कु. सुशांत ने भी अपने-अपने विचार सत्य और अहिंसा पर रखे। जी.आर.सी. की डायरेक्टर ब्र.कु. डॉ. निरुपमा ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। इस कार्यक्रम में एक हज़ार से भी अधिक गीता पाठी तथा साथ ही प्रिन्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से सम्बंधित बहुत सारे पत्रकार भी शामिल हुए।